“Biological Control of Sal Borer and Teak Skeletonizer/Defoliator insects”

MEDIA COVERAGE

साल बोरर किट के प्रबंधन पर दिया प्रशिक्षण

कार्यक्रम

- प्रोजेक्टर के माध्यम से दिया जानकारी

नवभारत प्रतिनिधि। चिल्फीघाटी.
www.navbharat.org

चिल्फी के ऑक्शन हॉल में गुरुवार को उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान जबलपुर द्वारा साल बोरर किट एवं सागौन के निष्पत्रक कीटो के जैविक प्रबंधन विषय पर क्षेत्र के वनकर्मियों व संबंधित अधिकारियों को एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया .

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिलराज प्रभाकर वनमंडलाधिकारी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम समन्वयक डॉ. पवन कुमार राणा वैज्ञानिक रहे. डॉ. राणा के द्वारा प्रशिक्षण के बारे में जानकारी देते हुये वनकर्मियों व अधिकारियों को प्रोजेक्टर के माध्यम से विभिन्न विधियों द्वारा साल बोरर कीट एवं सागौन के निष्पत्रक कीटो का जैविक प्रबंधन से किया जाता है. प्रशिक्षण में ट्री ट्रेप विधि का प्रयोगात्मक प्रदर्शन नाहर सिंह मावई, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी जबलपुर एवं सागौन के निष्पत्रक कीटो के जैविक प्रबंधन हेतु ट्राइकोग्रामाराई का टीएफआरआई ट्राइकोकार्ड बनाने की विधि का प्रदर्शन शशि किरण बर्वे, तकनीकी अधिकारी जबलपुर द्वारा दिया गया. इस अवसर पर मनोजकुमार शाह अधीक्षक भोरमदेव अभ्यारण, शिवेंद्र भगत प्रशिक्षु सहायक संरक्षक, देवेन्द्र गोड़ वनपरिक्षेत्र अधिकारी चिल्फी, द्रोपती ठाकुर प्रशिक्षु वनपरिक्षेत्रअधिकारी, जेपी मिश्रा, जेएल देशमुख, जेएस पाली के साथ क्षेत्र के वनकर्मी उपस्थित रहे.

- वार्ड स्थित हटरी पारा प्राथमिक स्कूल वाली गली में सीसी रोड रिनुवल की जरूरत है।
- गली में जहां नाली क्षतिग्रस्त है, उसके मरम्मत कराने की जरूरत है। पार्षद से मांग कर चुके हैं।

अगला वार्ड- शक्ति वार्ड- 14

जैविक कीट प्रबंधन पर दिया प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | चिल्फीघाटी

गुरुवार को चिल्फी के ऑक्शन हॉल में उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान केन्द्र जबलपुर ने साल बोरर किट समेत अन्य प्रकार के जैविक कीट प्रबंधन विषय पर वन विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में डीएफओ दिलराज प्रभाकर, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. पवन कुमार राणा उपस्थित थे। प्रशिक्षण सत्र में डॉ. राणा ने ट्री ट्रेप विधि का प्रदर्शन व जानकारी दी। इस दौरान मनोज कुमार शाह, शिवेंद्र भगत, देवेन्द्र गोड़, द्रोपती ठाकुर उपस्थित थे।

आपके काम की खबर • ब्रजराज नगर, लजकुरा

जबलपुर टीएफआरआइ में खोजी विधि, छत्तीसगढ़ में अपनाई जाएगी

पहली बार जैविक नियंत्रण का उपयोग कर रोकेंगे सागौन और साल के कीट

बिलासपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

सागौन व साल के वृक्षों की पत्तियों पर पनपने वाले घातक कीटों को नष्ट करने के लिए पहले रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर जैविक नियंत्रिण की विधि अपनाई जाएगी। यह विधि जबलपुर के टीएफआरआइ ने खोजा है। इस सफल प्रयोग को अब छत्तीसगढ़ के साल व सागौन के जंगलों में अपनाया जाएगा। इसी विधि को बताने के लिए मंगलवार को कार्यशाला रखी गई थी।

छत्तीसगढ के वनक्षेत्रों में सागौन व साल में जैविक प्रकोप के कारण इनकी वृद्धि पर विपरीत असर पड़ता है। एक अध्ययन के अनुसार सागौन के पौधों में प्रमुख निष्पत्रक कीट के प्रकोप से वृद्धि में लगभग 50-60 प्रतिशत की कमी पाई गई है। रासायनिक कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से इनकी रोकथाम मुश्किल थी। इसके स्थान पर जैविक नियंत्रण की विधि कारगार थी। लेकिन छत्तीसगढ़ इसमें पीछे था।

इसी बीच जबलपुर में जैविक नियंत्रण की सफल विधि की जानकारी मिली। इसे देखते हुए छत्तीसगढ राज्य कैंपा निधि से कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य वन संरक्षक कार्यालय के सभागार में सुबह 10 बजे से आयोजित इस कार्यशाला में विधि की विस्तार से जानकारी देने जबलपुर से वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पवन कुमार राणा व सहयोगी नाहर सिंह मावई (सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी) व शशीकिरण बर्वे (तकनीकी अधिकारी) यहां पहुंचे। उन्होंने कीट की रोकथाम की जानकारी दी।

बिलासपुर। मुख्य वन संरक्षक कार्यालय में कार्यशाला के दौरान उपस्थित अधिकारी। **● नईदुनिया**

इस तरह पनपने से रोकते हैं कीट

संस्थान द्वारा विकसित ट्राईकोकार्ड को एक अंडा परजीवी कीट प्रजाति ट्राईकोग्रेवा रावी से विकसित किया गया है। ट्राईकोकार्ड को सागौन प्रजाति के पत्तों में जो पूर्व से रोग ग्रस्त की शाखाओं में बांध दिया जाता है। सीधे वर्षा से बचाने के लिए इस कार्ड को पत्ते के पीछे बांधा जाता है। ट्राईकोकार्ड में ट्राईकोग्रेवा नामक परजीवी अंडे से अनुकूल परिस्थितियों में बाहर निकलकर नाशी कीटों के अंडों में अपना अंडा देकर उनका जीवन चक्र समाप्त कर देते हैं। तथा ट्राईकोग्रेवा परजीवी अपना जीवन चक्र शुरू कर देता है। इससे सागौन में लगने वाले कीट पूरी तरह नष्ट हो जाते है। जबलपुर से आए वैज्ञानिकों द्वारा यह भी बताया गया कि साल में लगने वाले साल बोरर कीट की रोकथाम के लिए भी जैविक कार्ड विकसित किया गया है। इसे साल बोरर से प्रभावित वृक्षों में बांध दिए जाने से साल बोरर के कीट का जीवन चक्र समाप्त हो जाता है।

सागौन पेड़ों को चट कर रहे कंकालक रोग

लोकस्वर मीडिया नेटवर्क
loksvar.in

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ राज्य के वनक्षेत्रों में उपलब्ध सागौन व साल पेड़ को कंकालक रोग भारी नुकसान पहुंचा रहे हैं। इन वनों की उत्पादकता को प्रभावित करने वाले जैविक कारकों में कीट एक महत्वपूर्ण जैविक कारक है। छत्तीसगढ़ के वनक्षेत्रों में सागौन एवं साल में जैविक प्रकोप के कारण इनकी वृद्धि, उत्पादकता तथा गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ा है। एक अध्ययन के अनुसार सागौन के पौधों तथा वृक्षों में प्रमुख कीट जैसे सागौन के कंकालक के प्रकोप के कारण पांच वर्षों में वृक्षों की वृद्धि में लगभग 50-60 फीसदी की कमी पाई गई है। अत: इनकी रोकथाम के लिए कीट नाशकों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है किन्तु वर्तमान में रासायनिक कीटनाशकों के दुष्प्रभाव एवं वृक्षारोपणों व वनों में कीटनाशकों के प्रयोग असम्भव होने से इनके रोकथाम एवं प्रबंधन के रूप में रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर जैविक नियंत्रण की विधि को अपनाया जा रहा है। इस संबंध में छत्तीसगढ़ राज्य कैम्पा निधि से पोषित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन ऊष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में हुआ। इसमें वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पवन कुमार राणा व उनके सहयोगी सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी नाहर सिंह मावई सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे। कार्यशाला का आयोजन मुख्य वन संरक्षक बिलासपुर के सभागार में सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक किया गया, जिसमें बिलासपुर वन वृत्त के सभी आठ वनमंडलों से कुल 35 फ्रंटलाइन फील्ड स्टाफ प्रतिभागी व मास्टर ट्रेनर के रूप में उपस्थित थे। इसमें कीटों से बचाव पर चर्चा हुई।

पाया जा सकता है नियंत्रण

सागौन पौधों में अक्सर वर्षा शुरू होने से ठंड ऋतु आते तक उनके पत्तों में कीटों की प्रकोप से पत्ते जालीदार हो जाते हैं। जिसे कंकालक रोग कहा जाता है। कुछ पत्तियों के डंठल ही बचे रह जाते हैं। कीट के लार्वा के द्वारा पूर्ण पत्तियों का भक्षण करने से मात्र मोटे-मोटे डंठल शेष रह जाते हैं जिसे रोग कहा जाता है। उक्त रोग निवारण की विधि एवं अपनाए जाने वाले सम्पूर्ण प्रक्रिया के संबंध में विस्तृत जानकारी डॉ. पवन कुमार राणा वरिष्ठ वैज्ञानिक टीएफआरआई जबलपुर ने दी।

सागौन के निष्पत्रक कीटों का दिया गया प्रशिक्षण

जैविक प्रबंधन पर दिया गया एक दिवसीय प्रशिक्षण

चिल्फीघाटी। नईदुनिया न्यूज

गुरुवार को चिल्फी के ऑक्शन हॉल में उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान जबलपुर द्वारा साल बोरर किट एंव सागौन के निष्पत्रक कीटो के जैविक प्रबंधन विषय पर क्षेत्र के वनकर्मियों व संबंधित अधिकारियों को एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिलराज प्रभाकर वनमंडलाधिकारी कवर्धा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम समन्वयक डॉ.पवन कुमार राणा वैज्ञानिक ई-प्रयागाध्यक्ष, वनसुरक्षा प्रयाग, उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर रहे।

इस मौके पर डॉ राणा द्वारा प्रशिक्षण के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए वनकर्मियों और अधिकारियों को प्रोजेक्टर के माध्यम से विभिन्न विधियों द्वारा साल बोरर कीट एवम सागौन के निष्पत्रक कीटो का जैविक प्रबंधन से किया जाता है। प्रशिक्षण में ट्री ट्रेप विधि का प्रयोगात्मक प्रदर्शन नाहर सिंह मावई, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी उ.व.अ.सं. जबलपुर एवम सागौन के निष्पत्रक कीटो के जैविक प्रबंधन के लिए ट्राइकोग्रामाराई का टीएफआरआइ ट्राइकोकार्ड बनाने की विधि का प्रदर्शन शशिकिरण बर्वे, तकनीकी अधिकारी उ.व.अ.सं. जबलपुर द्वारा दिया गया। इस अवसर पर मनोज कुमार शाह अधीक्षक भोरमदेव अभ्यारण, शिवेंद्र भगत प्रशिक्षु सहायक संरक्षक, देवेंद्र गोड़ वन परिक्षेत्राधिकारी चिल्फी, द्रोपती ठाकुर प्रशिक्षु वन परिक्षेत्र अधिकारी, जेपी मिश्रा, जेएल देशमुख, जेएस पाली के साथ वनकर्मी उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण में उपस्थित अधिकारी और कर्मचारी। **● वन विभाग**